

ὅστις, Προμηθεῦ, σοῖσιν οὐ ἔννασκαλᾶ
μόχθοις· ἐγὼ γὰρ οὐτ' ἀν εἰσιδεῖν τάδε
ἔχοντον, εἰσιδοῦσά τ' ἡλγύνθην πέαρ.

ΠΡ. καὶ μὴν φίλοις ἐλεινὸς εἰσορᾶν ἐγώ.

ΧΟ. μή που τι προύβης τῶνδε παὶ περαιτέρω; 255

ΠΡ. θυητούς γέπανσα μὴ προδέρπεσθαι μόρον.

ΧΟ. τὸ ποῖον εὔρων τῆσδε φάρμακον νόσου;

ΠΡ. τυφλὰς ἐν αὐτοῖς ἐλπίδας πατώκισα.

ΧΟ. μέγ' ὠφέλημα τοῦτ' ἐδωρήσω βροτοῖς.

ΠΡ. πρὸς τοῖσδε μέντοι πῦρ ἐγώ σφιν ὥπασα. 260

ΧΟ. καὶ νῦν φλογωπὸν πῦρ ἔχουσ' ἐφήμεροι;

ΠΡ. ἀφ' οὗ γε πολλὰς ἐκμαθήσονται τέχνας.

ΧΟ. τοιοῦσδε δή σε Ζεὺς ἐπ' αἰτιάμασιν

αἰπίζεται τε, πούδαμῆ χαλᾶ πακῶν;

οὐδὲ ἔστιν ἄθλον τέρμα σοι προκείμενον; 265

ΠΡ. οὐκ ἄλλο γέ οὐδὲν, πλὴν ὅταν πείνω δοκῇ.

ΧΟ. δόξει δὲ πῶς; τίς ἐλπίς; οὐχ ὁρᾶς ὅτι

ἡμαρτες; ως δέ ἡμαρτες, οὐτ' ἐμοὶ λέγειν

παθή ἡδονὴν, σοὶ τέ ἄλγος. ἀλλὰ ταῦτα μὲν

μεθῶμεν ἄθλον δέ ἔκλυσιν ζήτει τινά. 270

ΠΡ. ἐλαφρὸν, ὅστις πημάτων ἔξω πόδα

ἔχει, παραινεῖν νουθετεῖν τε τὸν πακῶς

253. ἀλγύνθην Ald. Rob.
Turn.

254. ἐλεινὸς Ald. Rob. Turn.
Atticos ἐλεινός tantum usurpare
monet Porsonus Praef. ad Hecub.
p. vii.

255. οὐ μὴν τοι Colb. i.

256. θυητούς ἐπανσα Ald. Rob.
Turn. quos sequitur Hermannus
Obs. Crit. p. 5. θυητούς γέ Lips. 2.
Pors. *Imo*; *mortales*, etc. Nice-
phor. ad Synes. p. 406. prave μό-
νον exhibet, et mox πατοικίσας,
haud male; ita quoque Schol. A.
“Plato Gorg. 523. D. (290.)”
R. P.

261. φλογοπὸν Ald.

265. οὐδὲν Rob.

266. ἐκείνω Ald. δοκεῖ Rob.

270. ἄθλον Ald. ἄθλων Rob.
Turn. Person. ἄθλον Med. Colb.

2. G. K. M. 1. 2. Φ. Schol. B. Ald.
marg. recte. cf. v. 65.

272. νουθεθεῖν Ald. τοὺς πακῶς
πράσσοντας omnes MSS. et edd.
Porsonus obelo notat. πράσσοντας.
εὐ δὲ ταῦθ' ἀπαντέ ηπιστάμην
Elmsleius. Heathii correctionem,
quam et Stanleius quoque in curis
posterioribus notarat, in textum
recepit. Locum mihi indicavit Gais-
fordius e Phrynichi Apparatu So-
phist. MS. qui hanc emendatio-
nem defendere videtur. ἐλαφρὸν
παραινεῖν τῷ πακῶς πεπραγότι.
ἐλαφρὸν σημαίνει τὸ δάδιον παλ
κοῦφον. Terent. Andr. II. i. 11.
Facile omnes quum valemus recta
consilia aegrotis damus. Quod ex
Menandri versu expressum fuisse
notat Muretus V. L. I. 9.
‘Τυῆς νοσοῦντα δάστα πᾶς τις
νουθετεῖ.